एक ऐतिहासिक दस्तावेज़

कश्मीरी पंडितों के नैशनल क्लब का गठन और बिरादरी का विघटन

डॉ0 बैकुण्ठ नाथ शर्गा

लखनऊ नगर में नवाबी शासन काल (1775–1856) को कश्मीरी पंडितों का स्वर्णिम युग कहा जा सकता है। इस काल खण्ड में बहुत बड़ी संख्या में कश्मीरी पंडित सीधे घाटी से तथा उत्तर भारत के अन्य प्रमुख नगरों और रजवाड़ों से लखनऊ में आकर बसे और उन्होंने अपनी योग्यता तथा कार्यकुशलता के बल पर नवाबों के राजदरबार में उच्च पद तथा बड़ी–बड़ी जागीरें प्राप्त कीं जिसके कारण उन्होंने जीवन के हर सुखः सुविधा का भरपूर आनन्द लिया। चूँकि उस समय नौकरी बड़ी आसानी से पिता की मृत्यु के पश्चात् उसके पुत्र को प्राप्त हो जाती थी अतः उनको कभी किसी बात की न चिन्ता हुई न उन्होंने कभी किसी प्रकार की चिन्ता करने की आवश्यकता समझी। आमतौर पर 10–12 सदस्यों के संयुक्त परिवार होते थे जिनका एक मुखिया होता था जिसका वचन गीता की कसम के समान समझा जाता था और उसका पूर्ण अनुशासन के साथ पालन करना उस परिवार के हर सदस्य का परम कर्तव्य माना जाता था। क़ौम, समाज, संगठन इत्यादि की कोई कल्पना किसी के पास नहीं थी। सब अपने–अपने शगलों में मस्त रहते थे। पर कभी–कभी दुर्भाग्यवश एकाएक परिस्थितियां एकदम बदल जाने के कारण संकट भी उत्पन्न हो जाते हैं और व्यक्ति को विवश होकर अपने और अपने परिवार के भविष्य के बारे में सोचने को बाध्य होना पड़ता है। कुछ ऐसी ही विषम परिस्थितियां तब बनीं जब अंग्रेजों ने सन् 1856 में अवध के अन्तिम शासक नवाब वाजिद अली शाह को राजसिंहासन से उतार कर अवध के शासन की बागडोर अपने हाथों में ले ली। अंग्रेजों ने न केवल अनेक कश्मीरी पंडितों को जो नवाब के मुलाज़िम थे पदमुक्त कर दिया अपितु उनकी जागीरें और जायदादें भी कुर्क कर लीं और उनके सामने अपने और अपने परिवार के जीवकोपार्जन के लिये संसाधन जुटाने का संकट उत्पन्न हो गया।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

जब कभी भी किसी क़ौम या समाज में इस प्रकार की अनिश्चितता की स्थिति बनती है तो उसका सही मार्गदर्शन करने के लिये एक युग पुरूष जन्म लेता है। कश्मीरी पंडितों के समाज को इस ऊहापोह की स्थिति से उबारने के लिये जो पथप्रदर्शक मिला उस दृष्टा का नाम था पंडित शिव नरायण बहार जिसने अपनी क़ौम में इस कठिन समय में न केवल नवचेतना जागृत की अपितु उसमें एक नये जीवन संगीत का संचार किया और उसको विषम परिस्थितियों का भी निर्भीक होकर डटकर सामना करने का पाठ पढ़ाया।

पंडित शिव नरायण बहार वे प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने क़ौम, समाज और संगठन की कल्पना को 19वीं सदी के उत्तर्राध में एक साकार रूप प्रदान किया और जिसको समाज के अन्य वर्गो ने बाद में कश्मीरी पंडितों से अंगीकार किया। यहां पर सुधी पाठकों को यह बात विशेष रूप से ध्यान देने के योग्य है कि अंग्रेजों के शासन के प्रारम्भिक दौर में किसी भी समाजिक संगठन को खड़ा करना लोहे के चने चबाने के समान था और विशेष रूप से कश्मीरी पंडितों का संगठन जो किसी का नेतृत्व शीघ्र स्वीकार करने को मानसिक रूप से तत्पर न हों। पंडित शिव नरायण बहार को बिरादरी के सदस्यों को अपने पक्ष में करने के लिये धरातल पर काफ़ी कठिन कार्य करना पड़ा और उनकी शंकाओं का अपने तर्कों द्वारा समाधान करना पड़ा। इस प्रकार काफ़ी विचार विमर्श और कठिन परिश्रम के उपरान्त लखनऊ में 9 फरवरी सन् 1868 को जलसा–ए–तहज़ीब नाम से प्रथम सामाजिक संगठन का गठन हुआ जिसका मुख्य उद्देश्य साहित्यिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों द्वारा बिरादरी के युवा वर्ग में एक नवचेतना जागृत कर उनको देश का एक होनहार नागरिक बनाना था जो अपने चारों ओर घटित हो रही घटनाओं के प्रति सचेत और सजग हो और जो अपने नागरिक अधिकारों और कर्तव्यों को भलीभांति समझ सकें। पंडित शिव नरायण बहार ने अपने अथक प्रयासों द्वारा अपने संगठन के माध्यम से कर्मठ और प्रतिभाशाली युवाओं की एक ऐसी जमात खड़ी कर दी जो उनके विचारों को एक जन आन्दोलन का रूप दे सके और बिरादरी में क्रान्तिकारी सामाजिक सुधार लाकर उसे कुरीतियों से पूर्ण रूप से मुक्त किया जा सके। जिस युवा वर्ग ने इस कार्य में उस समय महत्वपूर्ण भूमिका

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

निभायी उनमें प्रमुख थे पंडित गंगा प्रसाद शर्गा, पंडित हरिहर नाथ सोपोरी, पंडित बिशम्भर नाथ चकबस्त, पंडित कृष्ण नरायण दर, पंडित इक्बाल कृष्ण शर्गा, पंडित ज्वाला नाथ कौल, पंडित कुंवर बहादुर शुंगलू, पंडित गंगा प्रसाद तैमनी, पंडित श्याम नरायण मसलदान, पंडित शिव नरायण शिवपुरी तथा पंडित कृष्ण नरायण ज़रचोब इत्यादि।

जलसा–ए–तहज़ीब नामक इस संगठन की गतिविधियों को एक नियमित रूप से गति प्रदान करने के उद्देश्य से गोल दरवाज़े में एक कमरा किराये पर लेकर उसका कार्यालय खोला गया जिसमें एक पुस्तकालय भी स्थापित किया गया विभिन्न सामाजिक तथा राजनैतिक विषयों पर बिरादरी के युवाओं को निबन्ध लिखने के लिये दिये जाते थे और उन पर पंडित शिव नरायण बहार स्वयं बैठक बुलाकर टीका टिप्पणी करते थे ताकि बिरादरी का युवा वर्ग अपने जीवन के उत्थान के लिये मानसिक रूप से सक्षम बन सके और उसमें हर प्रकार की चुनौतियों का डट कर सामना करने की क्षमता उत्पन्न हो।

चूँकि पंडित शिव नरायण बहार प्रथम भारतीय थे जो अवध में उस समय डिप्टी इन्सपेक्टर आफ़ स्कूल्स बने थे और उनको अंग्रेज़ी भाषा लिखने और बोलने का समुचित ज्ञान था इस नाते पूरे प्रदेश के वासी उनका बड़ा आदर और सम्मान करते थे। जब उनको स्थानीय स्तर पर एक मज़बूत संगठन खड़ा करने में सफलता मिली तो उन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर एक संगठन खड़ा करने की कार्य योजना बनाई ताकि वे अपनी विचारधारा को और अधिक बिरादरी के सदस्यों तक पहुंचा सकें। पंडित शिव नरायण बहार ने इस कार्य योजना को मूर्तरूप प्रदान करने के लिये परिक्षायें समाप्त हो जाने के पश्चात सन् 1871 के अप्रैल माह में उत्तर भारत के उन सभी नगरों का व्यापक दौरा किया जहां बड़ी संख्या में कश्मीरी पंडितों की आबादी थी और उनका पूरा सहयोग और समर्थन जुटाने का भरपूर प्रयास किया। इसी सन्दर्भ में वह कश्मीर भी गये और वहां के पंडितों से इस विषय पर गहन विचार विमर्श किया। अपनी लगभग 2 माह की इस यात्रा के समाप्त हो जाने के पश्चात अपने अनुभवों के आधार पर आपने लखनऊ से मुरसला–ए–कश्मीर नामक पत्रिका 15 जून सन् 1871 को

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

प्रकाशित की जिसने बिरादरी में एक नयी जान फूंक दी। बिरादरी में हो रही इन गतिविधियों का समाज के अन्य वर्गो को पता न लगे इसका विशेष ध्यान रखा गया, अतः इस पत्रिका के प्रकाशन के लिये पंडित श्याम नरायण मसलदान के रानी कटरे के मकान में एक छापाखाना स्थापित किया गया और पत्रिका के प्रकाशन से सम्बंधित सारा कार्य कश्मीरी पंडित स्वयं करते थे। समाज के किसी अन्य वर्ग के सदस्य का इस छापेखाने में प्रवेश वर्जित था। इस छापेखाने को आर्थिक रूप से स्वावलम्बी बनाने के लिये एक अन्य पत्रिका मिरातुल हिन्द का भी प्रकाशन प्रारम्भ किया गया। बाक़ी आर्थिक सहायता बिरादरी के सदस्यों से चन्दे के रूप में ली जाती थी।

पंडित शिव नरायण बहार के यह प्रयास रंग लाये और राष्ट्रीय स्तर पर कश्मीरी पंडित नैशनल क्लब नाम से कश्मीरी पंडितों का एक संगठन अस्तित्व में आया। यह संगठन कब गठित हुआ और इसके संस्थापक पदाधिकारी कौन थे इस सम्बंध में विस्तृत जानकारी अब उपलब्ध नहीं है। इसका वार्षिक अधिवेशन सन् 1882 में लखनऊ के कश्मीरी मुहल्ले में स्थित ऐतिहासिक पंडित दयानिधान गंजू के शादीखाने में एक बहुत बड़े पैमाने पर हुआ था जिसमें बिरादरी की जिन नामचीन हस्तियों ने भाग लिया उनके नाम कुछ इस प्रकार हैं—पंडित काशी नरायण बहादुर, पंडित जानकी प्रसाद कौल बर्क, पंडित बृज मोहन नरायण कौल, पंडित कामेश्वर नाथ शर्गा, राजा शिव नाथ सिंह कौल, पंडित इक्बाल नरायण दर, पंडित कन्हैया लाल साहिबी, पंडित हृदय नरायण कौल, पंडित दुर्गा प्रसाद मुशरान, पंडित रतन नरायण दर, पंडित कृष्ण नरायण दर, पंडित राम नरायण उपाध्या, पंडित काली सहाय मुल्ला, पंडित प्रेमनाथ हांगल, पंडित कृष्ण नरायण हरकौली, पंडित बिशन नरायण कौल, पंडित प्रेमनाथ तकरू, पंडित निरन्जन नाथ बकाया, पंडित बैजनाथ कौल, पंडित प्राण कृष्ण जिब्बू, पंडित महाराज कृष्ण मुंशी, पंडित गंगा प्रसाद हुक्कू, पंडित मनमोहन कृष्ण मसलदान, पंडित लालजी कौल, पंडित श्याम नरायण मसलदान, पंडित गंगा प्रसाद तैमनी, पंडित बिशेश्वर नाथ हांगल, पंडित सूरज नरायण बहादुर, पंडित रूप नरायण तंखा, पंडित इकबाल नरायण बहादुर, पंडित बृज मोहन कृष्ण मसलदान, पंडित बैजनाथ शर्गा, पंडित अमर नाथ हाक्सर, पंडित स्वरूप नरायण कौल, पंडित प्राण नाथ बजाज, पंडित बैजनाथ हुक्कू,

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

पंडित काशी नाथ तकरू, पंडित अयोध्या नाथ तकरू, पंडित लक्ष्मी नरायण शर्गा, पंडित केशव नाथ गुर्टू, पंडित इन्द्र प्रसाद कौल, पंडित अयोध्या प्रसाद तैमनी, पंडित बिशम्भर नाथ भान, पंडित मोहन कृष्ण बक्शी, पंडित सोमनाथ लंगू, पंडित रामेश्वर नाथ मुबई, पंडित इक्बाल कृष्ण शर्गा, पंडित इक्बाल कृष्ण किचलू, पंडित जगत नरायण मुल्ला, पंडित बिशम्भर नाथ मुशरान, पंडित श्रीकृष्ण तिक्कू, पंडित हृदय नरायण दर, पंडित संगम लाल चक, पंडित कृष्ण लाल रूग्गू, पंडित राधे प्रसाद बांटू, पंडित माधो प्रसाद शर्गा, पंडित गोपी नाथ मुशरान, पंडित इक्बाल नरायण मसलदान, पंडित राम नाथ तंखा, पंडित द्वारिका नाथ तंखा, पंडित मनमोहन नाथ मसलदान, पंडित सूरज नरायण ज़रचोब, पंडित त्रिभुवन नाथ सोपोरी, पंडित अयोध्या नाथ कुंजरू, पंडित हरीश चन्द्र नाथ मुंशी, पंडित बिशम्भर नाथ तकरू, पंडित काशी नाथ गंजू, पंडित मोहन कृष्ण गुर्टू, पंडित कामता प्रसाद बॉटू तथा पंडित बिशन नरायण दर इत्यादि।

जब एक ओर बिरादरी को राष्ट्रीय स्तर पर संगठित कर शक्तिशाली करने की कवायद चल रही थी और नियमित बैठकें करके प्रस्ताव पारित किये जा रहे थे वहीं दूसरी ओर बिरादरी का एक 20 वर्षीय नवयुवक पंडित बिशन नरायण दर अपनी बी0ए0 की परीक्षा समाप्त कर अपने कैनिंग कालेज के अंग्रेज़ प्रोफेसर गौल के साथ बिना अपने माता–पिता की आज्ञा लिये और बिरादरी के किसी सदस्य को बताये 21 मार्च 1884 को बम्बई से पानी के जहाज द्वारा गुपचुप तरीके से लन्दन के लिये प्रस्थान कर गये। उन्होंने अपनी इस यात्रा के लिये अपने मित्रों से 3000/– रूपये एकत्रित किये थे। जब उनके इस कृत्य का समाचार कश्मीरी मुहल्ले तक पहुंचा तो पूरी बिरादरी में भूचाल आ गया क्योंकि तब तक ब्राह्मणों के लिये समुद्री यात्रा वर्जित थी और उसके लिये प्रायश्चित करना पड़ता था। यह समाचार प्राप्त होते ही आनन–फानन में बिरादरी की एक आम सभा पंडित दयानिधान गंजू के शादीखाने में आहूत की गयी जिसमें इस मुद्दे पर अनेक वक्ताओं ने अपने तर्क और कुतर्क रखे यद्यपि पंडित बिशन नरायण दर के पिता पंडित कृष्ण नरायण दर उस समय मजिस्ट्रेट थे पर वे भी बिरादरी की धार्मिक भावनाओं के विरूद्ध मोर्चा खोलने का साहस नहीं जुटा सके बिरादरी के सदस्यों की ऐसी धारणा बनी कि पंडित प्राण नाथ बजाज जो उस समय कैनिंग

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

कॉलेज में प्रोफेसर थे ने पंडित बिशन नरायण दर को लन्दर जाने के लिये कदाचित उकसाया इस नाते इन दोनों व्यक्तियों को बिरादरी से निष्कासित कर दिया जाय और उनसे भविष्य में किसी प्रकार का कोई सम्बन्ध न रखा जाये। यह ऐतिहासिक प्रस्ताव जो 30 मार्च सन् 1884 को सर्वसम्मत से पारित किया गया और जिसके कारण बिरादरी का प्रथम बार धर्मसभा और बिशन सभा में विभाजन हुआ उसको सारी बिरादरी की सूचना के लिये 01 जून सन् 1884 को छपवा कर देश भर में वितरित करा दिया गया जिसके उर्दू भाषा में शब्द कुछ इस प्रकार थे–

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

कार्यवाही जलसा धर्म सभा कश्मीरी पंडितान

यकुम जून 1884 ईसवी

ऐलान

वाज़े हो कि बाद आम जलसा क़ौमी मुनअकिद तीस मार्च 1884 ईसवी जिसकी कार्यवाही तबअ हो चुकी है बइतिफाक़ राय कौम यानि शिरकाय जलसा मज़कूर करार पाया कि अगर जुमला अरबाबे कौम बवजूहात गोनागों या अदम दस्तदाद फुरसत रोज़ाना जमा नहीं हो सकते हैं तो सिर्फ वही असहाब जिनको कोई वज़ह माने न हों रोज़ाना किसी मुकाम पर जमा हुआ करें और वो जुमला अरबाब की जानिब से मज़ाज अज़जाए कार ज़रूरी रहे सिर्फ जब कोई अमरखास जारी करना हो उसमें इसतिसवाब (परामर्श) आम कर लिया करें चुनांचे सब लोगों ने उसको कुबूल किया और कमेटी रोज़ाना की।

(1) जलसा क़ौमी मुनकिद तीस मार्च 1884 ईसवी मुतालिक उमूर ए मुनासिब का इज्जा व इंतजाम।

(2) वास्ते दुरूस्ती ख्यालात् धर्म व ईमान व मज़हब व बक़ाय मरजा व बुजुर्गान के तजवीस मुनसिब यकुम अप्रैल 1884 ई0 से ये कमेटी जारी हुयी और अमूरात ज़ेल कमेटी हिज़ा ने जारी और तजवीस किये–

(1) क़ौमी जलसे की कुल कार्यवाही मतबुआ की तरसील बखिदमत अक़ाबिरे क़ौम हर साल हुआ करे।

(2) तजवीस हुआ कि हर महीने में दो बार एक पर्चा मौतबुआ मुशतमिल बरतहरीरात ज़ेल बखिदमत अकाबिरे कॉम इरसाल हुआ करें।

अलिफ़–अफ़जूं अरबाबे कौम इसमायेगिरामी का जो वखतन फ वखतन बनज़र यकजहती दस्खत अपने सप्त फरमा दें।

बे– खुलासाये नक्ल तहरीरात अरबाबे क़ौम जो अलाहेदा सप्त दस्तखत बमज़ीद इनायत बसबाब खासमे अपनी राय ख़ाली या दीगर कलमात हमदर्दी ज़ाहिर फरमाते हैं।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

ज़ीम– मज़ामीन अरबाबे क़ौम मुताआलिक धर्म या दरजवाब तहरीर मुखालिफ।

दाल– अखबारे क़ौम जोखुसूसन काबिल इतिलाय आम हो।

(3) बतईदएराय जनाब पंडित केदारनाथ साहब कौल ओगरा जो जलसा 30 मार्च में बजरिए स्पीच ज़ाहिर हुई थी, तजवीज हुआ कि अब बहुत जल्द एक धर्म सभा हफ्तेवार क़ायम की जाये जिसमें कुल अरबाबे क़ौम शरीख होकर फैजियाफ अहकाम शास्त्र व धर्म कर्म व इखलाक़ हों।

ज़िम्न–बात क़ायम होने सबाए मौसूफ के हज़बेराय पंडितान सभा कोई माकूल तजवीज वास्ते इबिदाए तालीम व तदरीस इतफाल के निकाली जायें।

(4) तजवीज हुआ कि अभी तातज़बीस सानी ये पर्चा पन्द्रह रोज़ा बजरिये किसी मतबअ के तबाअ कराना चाहिए।

जिम्न 1– चूँकि ये पर्चा ज्यादा से ज्यादा एक या दो जुस का होगा इसलिए ऐसे एक जजीयात के वास्ते बुजुर्गान ए क़ौम को किसी किस्म की तकलीफ सिवाय राय की शराकत के न दी जाये।

जिम्न 2– पन्द्रह मई के पर्चे में कि पर्चा अवलीन है अगर कुल मुद्दात मजूज़ा की तकमील न हो सके तो इन्तिबा मुद्दात तकमील शुदा में ताखीर न हों।

इसतिदा– बुजुर्गाने दीन परवर की खिदमत में इलतिमास है कि अगर कोई बुजुर्ग वालामनुष अपनी राय ज़र्रीन मूफीद उमूरात दीन व आईन व मुतालिक तजावीस कमेटी लखनऊ बनजर रफा बइकजहतीय कौम ज़ाहिर फरमायेंगे तो हर गोना बाएस मसकूरी होगा। हतीउलवसी तामीले राय में कोशिश की जायेगी बदर सूरत दीगर असबाबे माजुरी गुजारिश होंगे।

गुज़ारिश

ए हमारे बुजुर्गान हामीए दीन व हमअसर बिरादरान खुशाआईन अलमदद हमारी क़ौम की हालत बलिहाज़ बक़ाए धर्म व ईमान व मरजाद बुजुर्गान बहुत ही नाजुक हो रही है क्योंकि अब तक जो खयालात नाकिस बखुदहा जाबज़ी बाज़े तबआये वा मुनाज़िला थे और उसका बतीन असर वाज़बी ही था किसी को ख़ास दस्तनदाज़ी का मौक़ा न था। मगर अब वो खराबिया जड़ पकड़ती जाती है जो उमूर व हरक़ात

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

ख़िलाफ उसूल मज़हब खुफिया और कुछ–कुछ खौफ के साथ ज़ाहिरी लिहाज़ के परदे में थे जो अब तश्तअज़बाम हो गये और दरसूरत न होने तवज्जो ख़ास के तमाम क़ौम पर उनका तसल्लुत हो गया। अवाम के नजदीक जाहिरी और साफ हमदर्दी व इतिफाक़ बहिमी इस क़ौम में थे जो भी उमूरात मजहबी के ज़लू में हम अनान है मालूम होता है कि जैसे हमारी गफलत ने दौलते नकद को रफ्ता–रफ्ता दीगर बिलायत में पहुँचारया यह दौलत जो लाज़वाल कहलाती थी अब इस पर भी वो राज़ क़ौम या कुछ ज़वाल आया चयन से मालूम होता है कि ये भी उस दौलत की कशिश से उसमें जाकर मिले इस वक्त से पहले ये था कि दौलत फिदाये ज़ान व ईमान है मगर अब क़ाजिया माकूस नज़र आया है। पंडित बिशन नारायन दर को जहॉ शौक तहसीले इल्म व माद्दा इंशापरदाज़ी परमेश्वर ने अदा किया था वहॉ तहज़ीब व लिहाज़ और बुजुर्ग दाश्त और दीगर अवशाफ भी बकशे थे अगर बलताएक अलज़ैल ये क़बूह बनेगा जो हादिस हुई बजरिए ताज़ा तालीम सहसाला के उसके ज़हन से न निकाले जाते जो उसकी तबियत और फिलकत से मालूम होता है कि ऐसे खयालात दर्ज़ी में जिसारत न करता और उसकी जिसारत पर क्या मौकूफ है अब जो मामलात उससे कतएनज़र करके रूबक़ार है उसकी वजह खास यही है कि जिन कमसिनो की राय संजीदा नहीं है उनकी लिसानी अयानत बाज़ उन असहाब की तरफ से है जिन पर संजीदगी का इतिलाफ़ है। हमारे नाज़रीन बातमकीन ग़ौर फरमायें कि अलावा ख़्याल धर्म ईमान के ज़ाहिरी बर्ताव दुनियादारी में जहॉ और बहुत से उमूर फर्ज़ हैं मिनजुमला उसके एक हमदर्दी भी है, बक़ौल किसी के.......

दर्द दिल के वास्ते पैदा किया इन्सान को
वरना ताअत के लिए कुछ कम न थी कर्द बुवॉ।

इधर तो एक मर्द बुज़ुर्ग की हालत पीरेकना की सी हो रही है उधर तमाम ज़माना नाराज़न है (कि हमारी क़ौम का आफताब लन्दन से तुलू हुआ) अफ़सोस अज़ चर्ख जिसे इस दशा को पहुंचाया यह सर्दमोहर्रा का ज़माना दिखाया कि अपनी बेमहल खुशी के सामने उस अज़ीज़ के उन वारिसों को ख़्याल भी न आया जिनके सीने को शर्क़े आफ़ताब दाग़े मफ़ारक़्त बनाया उसके ख़ास वालिद माजिद की कोफ्त और ख़ाहिश

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

पर रहम न खाया। हर एक शखस जान सकता है कि दूरी औलाद क्या रंज दिलाती है और फिर उसपर तुर्रा यह हालत ख़ास कि बादअल मश्रक़ीन मुल्क बेगाना थका व तनहा यारी न मददगारी और सिवाये कल्प की सहसाला तालीम व तलक़ीन के बदर्क़ा राह नहीं। इन तफ़ुर्करात ने जो हालत पंडित किशन नरायन साहब दर को पहुंचाई है उसका एक शोबाह अपने गमगुसारों पर ज़ाहिर किया है कि जो हालत ख़बर खानगी अज़ीज़ जिगरबन्द पंडित साहब पर गुज़री उसका असर नाज़रीन पर हुआ होगा। मगर जब पंडित माहब मौसूफ लखनऊ तश्रीफ लाये तो सिवाये उन मोहसिनाने रायगुसार के जो (नमक पर जर्राहत) मुबारकबाद देने को गये थे और जो लोक कि मिलने गये थे उनकी अफसुर्दगी का खुदा ही अलीम है। वाज़े दूरअनदेश और आक़बतबीन असहाब उसकी निस्बत अदायल में फरमाते थे कि गो मुफारिक़त शाक़ होगी मगर उसका असर आरज़ी होगा। काश उन असहाब हिक्मत माआब का मक़ूला सच होता और हमको यह अफसोस ज़ाहिर करने का मौक़ा न मिलता कि पंडित साहब बाद एक माह के अब फिर लखनऊ तश्रीफ़ लाये हैं। मिजाज़ कसलमन्द है जिसकी वजह से एक दिन जो हकीम मोहम्मद मसीह साहब के पास गये तो हकीम साहब का अव्वल सवाल ये हुआ कि हज़रत क्या आपके दिल पर कोई रंज सख्त लाहक़ है तब एक साहब ने कहा कि आपको नहीं मालूम है इनका जिगर गोशा विलायत भेजा गया है बगौर सुनने इस कल्मे के हकीम साहब मै दीगर हाज़रीन के आबदीदा हुये। अब इस हाल के ज़ाहिर होने से दीगर वरसा के रंज की मिक़दार हासिल हो सकती है।

शहर लखनऊ के अरबाबे क़ौम से बहालत मजमूयी जो बात कभी नहीं हयी थी वो होने लगी। हाल में जो पंडित सूरज नाथ साहब उर्फ आगा बाहर से शादी करने यहॉ तश्रीफ लाये उनकी खिदमत में हाल वाकई अरबाबे क़ौम अर्ज कर दिया गया फरिश्त अरबाबे क़ौम भी पेश की गयी पंडित साहब मौसूफ ने उस वक्त जातिय मसलहत पर नज़र की और शादी के वक्त पर कि तमाम क़ौम की शराक़त जरूरी होती है उस पर खयाल न किया सिर्फ किसी वास्ते खास कि खुसूसियत को मुकद्दम रखा बन्द पर दस्तखत सब्द नहीं किये क़ौम को किसी किस्म का तासुब न था सिर्फ उजर गैर हाज़िरी कर दिया मगर उनकी तामील उमूर गैर ज़रूरी के वास्ते एक बुजुर्ग

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

क़ौम सरगर्म कार रहे और अरबाबे क़ौम को दीगर उमूरात ज़रूरी की तरफ से जिनमें चार भाईयों की शिराकत से रौनक होती है इस वजह से इतमिनान था कि जिन असहाब के वास्ते कि उन्होंने एक खास पाज़दारी की है वा मैं दीगर उन असहाब के जिनकी उनको पाज़दारी है बदल कारहाय ज़रूरी में मुनसरिम रहेंगे न मालूम क्या सबब हुआ कि उन लोगों ने हमारे परदेसी पंडित साहब को बावजूद ज़हूर जानिबदारी बिलकुल तनहा छोड़ दिया बरात के साथ वही एक हमारे पंडित बैजनाथ साहब बनारसी बनफ्से नफीस इहतिमामी थे और कोई मनसरिम न था बमुशायदा हाल मारूज़ा जब अरबाबे क़ौम शख्त अफसोस हुआ तो पंडित साहब को जहॉ तक मलाल न हुआ हो थोड़ा है और हक़बजानिब है अगर ये बेऐतनाई उनके तरफदारों को पहले से मालूम होती तो ये बेउनमानी क्यों होने पाती। तमाम क़ौम उनकी रिफाक़त में सर के बल जाती। इस तरफ से उस वक्त तक तहरीरात व मजामीन अखबरात को कुछ जरीयाये बहबूत नहीं समझा गया और न आइन्दा के वास्ते उसका काफी खयाल है। ये जो कुछ अर्स किया गया है या आइन्दा बयान में आयेगा उसकी वजह ये है कि अक्सर तहरीरात को देखने से मालूम होता है कि अक्सर असहाफ को दरियाफ्त हालात की ख्वाहिश है बल्कि अक्सर मुकामात से सवालात सादिर हुये है। उनके मुक्तसर जवाबाद शायकीन को मिलेंगे। एक तहरीर में सवाल है कि जलसाये तहजीब क्यों तोड़ा जाये इसलिए अर्स किया जाता है कि जलासाए तहजीब शैदीगर है क़ौम की गरज़ कश्मीरी नेशनल क्लब से है जिसकी बुनियाद यह है कि जब ये जारी हुआ तब उसके बानी एक–एक अहले क़ौम के पास गये और फरदन–फरदन उसकी मंजूरी इस बुनियाद पर करायी कि आपके बच्चे शाइस्ता होंगे इल्म और इख़लाक सीखेंगे। और वही क़ौम बिल्इत्तिफ़ाक़ यकज़बान होकर बदावा यगानियत व इस्तेहकाक़ क़दीम अर्ज़ करती है कि यह क्लब टूटे मगर क्या मानी जो टूटे अरे जनाब बाहम्द गर रिश्ता यगानिअत टूटे सारी क़ौम छूटे मगर यह क्लब न टूटे जिसके औसाफ नाज़रीन को मज़मून अख़बार तम्मनाई से मालूम होंगे और शायद आइन्दा किसी और ज़रिये से वाज़ह होंगे। फ़क्त आखरी मज़मून में हम बसदजुबान ईश्वर से दुआ मांगते हैं कि इलाही बुनियाद फसादात ग़ारत हो।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

इत्तिलाह

तजवीज़ जल्सा क़ौमी मुनक़िदाह 30 मार्च को पंडित प्रान नाथ साहब उर्फ बक़्शी ये हाज़रीन जल्सा के रूबरू खड़े होकर हर्फ़ बहर्फ़ बाआवाज़ बुलन्द पढ़कर सुनादी थी बाद सब साहिबान ने दसख़्त किये।

<u>तौसीह जल्सा 30 मार्च 1884 ई0 मती चैत सौदी तीज सम्वत 1941 बरोज़ यकशम्बा</u>

वाज़्हः रायेज़ियाये बुज़ुर्गान वाला शान कि मुद्दतख़मीनन तीन साल तक एक कल्ब शहर लखनऊ में इस बयान से काएम हुआ था कि इसमें ख़ास क़ौमी लड़कों का जल्सा रहा करेगा और इल्मी लियाक़त की तरक़्क़ी में पैरवी और कोशिश की जावेगी चुनांचे बनाये चन्दे तो क़रीना बज़ाहिर अच्छा रहा यानी तरक़्क़ी इल्म में पैरवी हुई लेकिन रफ़ता रफ़ता ऐसे ख़्यालात मुबदल हो गये और ऐसे कुछ असबाब फ़ुतूर तालीम व तलक़ीन में वाकेह हुई कि लड़कों की तबीयत आज़ादाना हो गई और बरख़िलाफ़ तहज़ीब कैफ़िअत जेहल–मुर्कब के मिजाज़ों में पैदा हो गई, हर मेम्बर कल्ब अपने ज़मेबातिल में अफलातून वक़्त और लुक़मान असर बन गया। अब उनके नज़दीक बुज़ुरगाने सुल्फ महज़ बेअक़्ल और कम फ़ैहम ठहरे और इन मफहूमाते बातिला की वक़्कत लड़कों के दिलों में बढही। हर चन्द्र कि और और मुक़ामात में भी बतौर शहर लखनऊ कल्ब क़ायम हुए लेकिन जैसा कि ख़ास लखनऊ के कब्ल के अड़के खेराह हो गये और हदे इख़्तियार से बाहर निकल गये वैसे और मुक़ामात के कल्ब के लड़कों की कैफियत नहीं ज़ाहिर हुई और लखनऊ के कल्ब में मामला बिलअक्स (विपरीत) नज़र आया। यहॉ तक कि पंडित बिशन नारायन दर ख़ल्फ (पुत्र) पंडित किरन नारायन साहब दर मुनसिफ अतरीला जो लखनऊ के कल्ब में सकतर (सिकरेट्री) या बदिन इत्तिलाह अज़ीज़ान व बुज़ुर्गान हत्ता कि बिला इत्तिलाह अपनी बालिदा माजिदा के लन्दन अकेला चला गया तो और कल्ब के लड़कों ने यह हाल मुनके अज़रूये कमाल ताजुब और हैरत कहा कि क्या बिशन नारायन दर अपने अपने वालिद के अदम इत्तिलाह में लन्दन चला गया। लमको अब इस अमर में तहरीर करने की ज़रूरत बाक़ी नहीं रही। ख़ास इस शहर के लड़के क्यों इसक़दर अज़ाद मशर्ब हो गये। यह लियाक़त इतिफाल है या करीना इनायत बजुर्गान बुलन्द श़्ह्याल कि जिन से उनको

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

ख़यालात अज़ाद क़ायम रखने के वास्ते और उमूर व क़यूद मज़हबी को फ़ुज़ूल समझने के लिये अब तक मदद मिल रही है। हम उन मुक़ामात के लड़कों से और कल्ब से निहायत खुश हैं कि जहां ख़यालात उमदा हैं और ऐसे मुक़ामात के कल्ब के कायम रहने में हमारे ख़यालात ख़िलाफ नहीं हैं।

इस अमर को जुमला अकाबरे क़ौम बजाये खुद तज़वीज़ कर सकते हैं कि बुजुर्गों के तरीक़े और रविश और उनके लेहाज़ और पास मरतिब का ख़याल यह सब लखनऊ के कल्ब में फ़ुज़ूल और दक़यानूसी ख़याल समझाये जाते हैं। इस कल्ब के लड़के अपने बाप के रूबरू अपने बुजुर्गों को गधा कहते हैं और उनके इरशाद को आवाज़े 'सग' और यह ख़िताब उनको मुख़फी (   ) अता नहीं होता बल्कि बरमला आम कौमी जल्सों में बाआवाज़ बुलन्द यह अलफाज़े शाइस्ता उनके हक़ में इरशाद फरम3ाये जाते हैं और खुद मौरिद (पात्र) शाबाश व आफरीन होते हैं और नतीजा तालीम कल्ब माकूस वाक़ेह हुआ है। अज़मत बुजुर्गान असलन उनके दिलों में नहीं है और इसलाफ के आईन व रविश को जो बाअसे क़याम अज़मत कौमी और मूजिबे इसतेहकाम (मज़बूती) धर्म हैं क़बीह (खराब) और सबून (खराब) ठहराकर ऐलानिया उसकी मनसूख़ी का हुकुम देते हैं और शिखा यानी चोटी को जो कि बड़ा निशान कौमे हुनूद है काटने लगे और हत्ता कि और लड़कों को भी चोटी काटने पर मजबूर करते हैं। इन जुमला उमूरात की श्हादत मौजूद है। सरासरी ख़ामाह रास्ती तरजुमान ने तहरीर नहीं किये लेकिन बावजूद ऐसे ख़्यालात के उनको बाज़ बुजुर्गान कौमी से वखतन फ वखतन खबर मिलती रहती है और अब तो बख़ूबी उस तरगीब और अनायत का खयाल ज़ाहिर हो रहा है। दामाद और अज़ीज छोड़ना गवारा मगर क्लब का तोड़ना मज़हब आबाई का छोड़ना समझा जाता है। अंजाम इन सब खयालात आज़ादाना और उसमें अयानत पहुंचने का ये हुआ कि पंडित विशन नारायण दर बगैर इतिला अपने बाप के तनहा लंदन चला गया और मजीद ये हुआ कि कुल सामान सफर लन्दन इसी शहर में बुजुर्गों की अयानत तैयार हुआ और इस तैयारी में किस कदर अरसा गुजरा लिकिन अल्लाह रे राज़दारी की बावजूद इत्तिला ये राज़ किसी शख्स गैर पर आशकारा न हुआ यहां तक कि वो यहां से बम्बई गया और बम्बई से

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

जहाज पर सवार हो गया। जब मामला लाइलाज हो गया तब घर वालों पर ज़ाहिर किया कि बम्बई से तार आया है कि बिशन नारायण जहाज पर सवार होकर रवाना लन्दन हो गया वो बेचारे सुनते ही सरासीमा और परेशान हुये और कहला भेजा कि पर्चा भेज दो वहां से जवाब आया कि पर्चा पढ़कर चाक कर डाला गया और कहा कि उसे दुआ दीजिये कि वो अच्छा रहे और रूपया बिलायत भेजिये। वाज़े रहे कि अव्वल ये खबर तार रवानगी विलायत जनाब पंडित श्याम नारायण साहब मसलदान के घर पर आया और खुद उनके बिरादर ज़ादा ने बयान किया कि जिसका फिर पता न मिला और चाक कर डालना बयान हुआ बाद जो खत विशन नारायण ने अपने बाप पंडित विशन नारायण साहब के भेजा। इससे ज़ाहिर होता है कि किन बुज़र्गाने क़ौम को वो अपना मोईन और मददगार समझा था और किस वजह से क्या–क्या उम्मीदें और भरोसा उसके दिल में उन साहबों की जानिब से था और बाकी बुजुर्गाने क़ौम के खयालात की निसबत उसके दिल में क्या–क्या असर इस सोहबत से पैदा हो गया था और यह बात भी तहकीक है कि दरहकीकत तार बम्बई से नहीं आया बल्कि हज़रात को बजरिये सलाह मसविरा जो एक मुद्दत से बतौर राज़दारी बाहम था इत्तिला थी कि फलां तारीख को बिशन नारायण जहाज पर सवार होगा उसके बमोहजिप ऐलान उसका कर दिया बहरहाल कोई साहब उज्र अदम इत्तिला अज्म ज़ज्म विशन नारायण साहब लन्दन पेश नहीं कर सकते अलावा इसके और भी कई साहबजादों का अल्म जज़्म और तहीया कामिल सफर लन्दन पशोपेश बहुत तहकीक सुना गया उनके घरों में तलातो मज़ीम पड़ गया और खयालात इतिफाल नौउम्र तालकम याफता क्लब लखनऊ से बहुत जायदातों की तबाही का ख़याल और बेचारी लड़कियों की बरबादी का अंदेशा जो उनसे मनसूब है कौम में पैदा हो गया और लड़कों की खैरगी और आज़ादी पर नज़र करके ये ख़ौफ और अंदेशा नेहायत कवी और अज़ीम था लेहाज़ा एक जलसा कौमी धर्म सभा चैत्र सदी तीज सम्वत् 1941 यकशम्बा मुताबिक़ तीस मार्च 1884 ईसवी को उजलत के साथ वास्ते इंसदाद तबाही आइन्दा शहर लखनऊ में कायम हुआ। जिसकी इत्तिला शहर में की गयी और जहॉ तक जल्दी में मुमकिन हुआ इतराफ में भी अकाबिरे क़ौम को बज़रिए हुतूत इत्तिला धर्म सभा दी गयी और

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

बेशतर बुजुर्गाने क़ौम ने अपने–अपने साहबज़ादों और अज़ीजों को क्लब जाने से मूमानियत की और उनका जाना कतई मौकूफ कर दिया और इस जल्से में ये क़रार दिया गया था कि जनाब पंडित प्राननाथ बजाज मास्टर से जिनका असर तालीम लड़कों के दिलों पर ज्यादा है दोस्ताना मदद ली जायें और उनके जरिये से लड़कों को इस आफत से बचाने की तदबीर की जाये लेकिन उन्होंने जलसा धर्मसभा मुकरदा (बुरा) समझा हत्ताकि किसी को अपनी जानिब से न भेजा। लेहाज़ा बमजबूरी जैसा कि बखयालात मरकूमाबाला और हालात मिनदर्जा तजबीस तमाम अकाबर मौजूदा जलसा धर्मसभा सभा ने तजबीस फरमाया वही दर्ज हुआ और जो–जो अशखाश बवजह किसी उर्ज जरूरी के तशरीफ न ला सकें उन साहबों ने अपना इत्तिफाक तजबीस के जाहिर फरमाया और अब तक जाहिर फरमा रहे हैं। ये बात बखूबी वाजे थी कि क्लब का तोड़ना और लड़कों के दिलों का फेरना प्राननाथ साहब के इख्तियार में है जैसे कि अब बखूबी जाहिर भी हो गया इसलिए क्लब का इलतिमास किया गया था ये ऐसा कोई भार पंडित साहब पर नहीं डाला गया था जिससे उनको कोई जहमत होता या उनकी कशरशान होती या बदल उस आफत अजीन का होता जो कि पंडित किशन नारायण दर और उनके मुतलिकान पर नाजिल हुई और भी खहाने क़ौम के दिलों पर उसका असर पुरमलाल पहुँचा। लेकिन पंडित साहब मौसूफ ने बरखिलाफ तजबीस धर्मसभा उसी रोज़ जलसा क्लब मुखलिफाना तौर पर किया तो हमेशा जलसा मामूली क्लब यकशम्बा को हुआ करता था या अब हर रोज होने लगा और आज तक उसी खयालात की तरक्की में जिससे कि जररकुल्ली क़ौम को पहुंचा सके कोशिश फरमा रहे हैं। जलसये क्लब में जो कि धर्मसभा के दिन किया गया एक नयी बात थी कि पंडित प्राननाथ साहब ने खत्म जलसे के बाद शुकराने के तौर पर दालमोट वगैरा मंगवाई पहले आप खाई और मुंह की झूठी मान्दा में डाल दी और तबरूकन सब लड़कों मेम्बराने क्लब को खिलायी गयी इससे बढ़कर बात हुई कि पंडित प्राननाथ साहब ने अपनी स्पीच में बआवाज़े बुलन्द मेम्बरों से मुखातिब होकर फरमाया कि भाइयों हम लोगों को अरबाबे क़ौम ने विशन नारायण के बिलायत जाने पर खारिज किया अब ऐसी कोशिश और पैरवी होना चाहिये कि हर महीने एक लड़का विलायत रवाना हुआ

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

करें। शुरकाये जलसा क़ौमी ने बात तजबीस तीस मार्च क्लब को तोड़ देने की बावत बज़रिये खास मेम्बराने क्लब कोशिश की और कर रहे हैं। साहबज़ादगाने क्लब ने जो तहरीरात धर्मसभा लिखी और जाबजां रवाना की उसके जरिये से गोया क़ौमी अजमत तोड़ने में बजाए तोड़ने क्लब के अनायत की खाहितगार हुये। यहां पर हम नहीं लिख सकते कि ये तहरीरारत बमश्वरा हुई हैं या कातिबाने ख़त में अपनी तबीयत से लिखे हैं ख़त में अलफाज़ ज़ेल दर्ज हैं।

''विशन नारायन के विलायत जाने का हाल सुनकर आपको निहायत मसर्रत और खुशी हासिल हुई होगी। और निस्बत अकाबरे क़ौम यह लिखा है कि लानत है ऐसी क़ौम पर कि नौजवानों की उम्मीदों का ख़ून करवा दें और हासिदों और कोताहबीनों के लफ़्ज़ अहले क़ौम की शान में लिखे हैं। नाज़ारीन ख़ुतूत इस तहरीर से ख़ूब वाक़िफ हैं। हमने इलज़ाम देने के लिये दर्ज नहीं किये हैं लेकिन बड़े अफसोस की बात है कि बावजूद ऐसे हालात के सुना जाता है कि बाज़ बुज़ुर्गाने क़ौम के ख्यालात आज़ादी पसन्द इतफाल (लड़कों) के माईन (मददगार) हैं। जल्सा धर्मसभा अपनी बहबूदीये क़ौम (क़ौम की भलाई) और इतफाल के ख्यालात की इसलाह (सुधार) जो सोहबत और तक़लीन व तालीम कल्ब से पैदा हो गये हैं, चाहती है और हालात कल्ब क़सरे नसल आईन्दा व इतफाल मौजूदा ज़बरहमज़न बिनाये धर्म व ज़ायेकुन नाम क़ौम कश्मीरी पंडितों के हैं। लिहाज़ा यही मुनासिब समझते हैं कि कल्ब ख़ास लखनऊ जिसका नतीजा निहाएत ख़राब निकला, तोड़ दिया जाये और क़ौमी अज़मत जिसके तोड़ने से नामोनिशान क़ौम मिट जाने का और एकाएक बेधर्म हो जाने का ख़ौफ फौरी व सर्ही है, ज़रूर क़ायम रखी जाये। लिहाज़ा कुल शुरकाये जल्सा धर्मसभा बपाबन्दी तजवीज़ 30 मार्च 1884 ई0 फीमाबईन (आपस में) अहद करते हैं कि इस शहर लखनऊ खास में जहॉ ख़ौफ तालीम कल्ब मज़कूरावाला (उपरोक्त) हुआ है, जो शख़्स खिलाफ़ तजवीज़ मज़कूरा क़बल अज़ तोड़ने क्ल के पंडित प्राननाथ साहब बरार माली क्लब लखनऊ को दावत में बुलायेगा या उनके यहॉ दावत में जावेगा जैसा कि जल्सा धर्मसभा शहर लखनऊ में तीस मार्च 1884 ई0 में निसबत पंडित प्राननाथ साहब बजाज के सब अकाबिरे क़ौम ने तजबीस किया है वही बर्ताव उस शख्स के साथ भी किया

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

जायेगा। क्योंकि हर एक मुकाम पर अकाबिरे क़ौम को हमसे ज्यादा बजाय खुद पास व ख्याल बहबूदे क़ौम (क़ौम की भलाई) हिब्ज आइन व मरजाद बुजुर्गान जो हर वख्त हम लोगों को फायदा बख्स है और हिब्जे धर्म व बहबूदे नस्ल आइन्दा व इतफाल मौजूदा और कायम रखने अजमत क़ौमी का है। हरचन्द बाज अरबाबे लखनऊ बुजुर्गाने क़ौम के रूबरू जो बहरनौ वाक़िफ हक़ीक़त वाक़ई है गुंजाइश कलाम न पाकर बुजुर्गाने मुक़ीमा मुक़ामात मुक़तलिफ (दूसरे शहरों में रहने वाले बुजुर्ग) के पास तहरीरन और तक़रीरन बबर्दाश्त तकलीफ शफर व खर्चे ज़र खुदा जाने क्या–क्या झूठ सच बयान करके इख़्तिलाफ क़ौमी पैदा करने के और बरबादी आइन्दा और इतफाल मौजूदा के लिए खवासतगार अमानत हुये हैं लेकिन जो पसंदीदा और मामला फहम और रास्त बाज़ लोग हैं उनके सामने हक़ व बातिल (झूठ व सच) जुदा हो जाता है हमको अमर लिखना खिलाफे अदब समझते हैं।

लिहाज़ा हम लोग इस अपने इलितिमास आज़िज़ाना (नम्रतापूर्ण) से जुमला बुजुर्गान वाला शान क़ौम को सिर्फ इत्तिला देना हालात रास्त बरास्त से मुनासिब वख़्त समझते हैं और हम लोग उम्मीद करते हैं कि हर एक मुकाम पर बुजुर्गान क़ौम वास्ते हिफाज़त उमूर मसकूरा (उपरोक्त) के खुद तज़बीस मुनासिब फरमायेंगे और हम लोग फरमाबरदार बुजुर्गाने क़ौम समझते हैं और अज़मते क़ौमी को बाइसे इफितिखार और बकाये नामोनिशॉ क़ौम तसव्वुद करते हैं। खुदावन्द करीम इस अज़मते क़ौमी को हमेशा क़ायम रखे।

आमीन–आमीन–आमीन।

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

इस ऐतिहासिक दस्तावेज़ पर विभिन्न नगरों के 205 बिरादरी के सदस्यों ने अपने हस्ताक्षर करके बिरादरी की एकजुटता बनाये रखने का द्रढ़ संकल्प लिया। जिन महानुभावों ने अपने हस्ताक्षर अंकित किये उनके नाम कुछ इस प्रकार थे—पंडित इन्द्र नरायण किचलू, पंडित इक्बाल कृष्ण गंजू, पंडित अमर नाथ खूंखूं, पंडित अमर नाथ हाक्सर, पंडित बिशम्भर नाथ तंख़ा, पंडित बैज नाथ बनारसी, पंडित बैज नाथ मिश्री, पंडित बिशेश्वर नाथ बहार, पंडित बिशन नाथ हुण्डू, पंडित बैज नाथ राज़दान, पंडित बैज नाथ सप्रू, पंडित बैज नाथ काचर, पंडित बैज नाथ कुंवर, पंडित भैरो नाथ हुण्डू, पंडित विश्व नाथ शर्गा, पंडित बिशम्भर नाथ पुलहरू, पंडित बैज नाथ तंख़ा, पंडित बिशन नरायण वली, पंडित बिशम्भर नाथ कौल अकबराबादी, पंडित बिहारी लाल सत्थू, पंडित बैज नाथ कौल शर्गा, पंडित बैज नाथ अशरफी, पंडित बृज नाथ भान, पंडित बिशम्भर नाथ कौल शर्गा, पंडित भोला नाथ हुण्डू, पंडित भवानी प्रसाद रूग्गू, पंडित बिशन नाथ गोर सर्राफ, पंडित बाल कृष्ण दर, पंडित, प्रेम नाथ तकरू, पंडित प्रसाद राम तकरू, पंडित प्रेम नाथ हांगल, पंडित प्रेम नाथ ऊंट, पंडित पृथ्वी नाथ पडरू, पंडित प्रेम नाथ खूंखूं, पंडित ठाकुर दास शिवपुरी, पंडित जगत नरायण दर, पंडित जानकी प्रसाद पडरू, पंडित श्री नरायण मसलदान, पंडित जय नरायण दर, पंडित जगत नरायण ज़ालपुरी, पंडित श्री नरायण मुट्टू, पंडित जगत नरायण गोरिया, पंडित देवी प्रसाद शुंगुलू, पंडित दुर्गा शंकर कौल शर्गा, पंडित दयाराम कौल शर्गा, पंडित दीनानाथ तिक्कू, पंडित राज नरायण बक्शी, पंडित राम नरायण सप्रू, पंडित रतन नाथ दर, पंडित राम नरायण बक्शी, पंडित राजाराम बक्शी, पंडित राधा कृष्ण शोरा, पंडित राम शंकर कंठ, पंडित राज कृष्ण हस्तवालू, पंडित राम नरायण भट, पंडित शीतला प्रसाद गंजूर, पंडित श्रीकृष्ण कौल नाला, पंडित श्रीकृष्ण कौल, पंडित संगम लाल हुण्डू, पंडित सोम नाथ लंगू, पंडित श्रीकृष्ण वातल, पंडित शिव प्रसाद भट, पंडित श्याम नरायण कौल, पंडित शिव नाथ कौल अकबराबादी, पंडित शिव प्रसाद हज़ारी, पंडित श्याम लाल मुन्शी, पंडित श्याम प्रसाद ज़ुत्शी, पंडित श्याम प्रसाद काचरू, पंडित तोताराम घासी, पंडित कृष्ण नरायण दर, पंडित केदार नाथ आगा, पंडित केशव नाथ गुर्टू, पंडित केशव नाथ काचर, पंडित कुंज बिहारी लाल मुन्शी, पंडित केदार नाथ भान

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

पंडित केशव नाथ चकबस्त, पंडित कुन्दन लाल रूग्गू, पंडित केदार नाथ लंगू, पंडित काशी नाथ कुंजरू, पंडित कामेश्वर नाथ बमरू, पंडित काशी नाथ दर, पंडित कन्हैया लाल वातल, पंडित कृष्ण कुमार ज़र्द, पंडित केवल राम काचरू, पंडित गोपी नाथ शिशु, पंडित गंगा प्रसाद हुक्कू, पंडित गौरी शंकर कौल, पंडित गंगा प्रसाद तैमनी, पंडित गंगा प्रसाद कश्यप, पंडित गोपी नाथ बॉटू, पंडित गोपाल रावल, पंडित गुलाब राय कमला, पंडित गोपी नाथ चन्दर, पंडित गंगा प्रसाद घासी, पंडित गोपी नाथ कौल, पंडित गौरी शंकर लंगू, पंडित गौरी शंकर कौल नाला, पंडित लाल जी प्रसाद कौल, पंडित लाल जी प्रसाद बालिया, पंडित लालता प्रसाद ज़ारू, पंडित लक्ष्मी नारायण जिब्बू, पंडित लक्ष्मी नरायण सर्राफ, पंडित माधव प्रसाद चक, पंडित महाराज कृष्ण चकबस्त, पंडित मंगल बाबू मुंबई, पंडित महाराज कृष्ण काचर, पंडित निरंजन नाथ बकाया, पंडित नरायण जी मीचू, पंडित हरि कृष्ण बक्शी, पंडित हर प्रसाद मुशरान, पंडित हिम्मत नरायण दर, पंडित हृदय नरायण किचलू, पंडित हर प्रसाद बर्क़, पंडित हर प्रसाद कौल, पंडित हरि शंकर अशरफी, पंडित बद्री नाथ किचलू, पंडित राज नरायण गरीब, पंडित शिव नाथ चक, पंडित अमर नाथ साहिबी, पंडित बद्री नाथ शाह, पंडित श्याम नरायण दौर, पंडित भोला नाथ रूग्गू, पंडित शिव नरायण हांगल, पंडित श्रीकृष्ण कौल शर्गा, पंडित कृष्ण जी कल्ला, पंडित ठाकुर प्रसाद ओखल, पंडित बिशन नरायण हांगल, पंडित देवी प्रसाद नाला, पंडित चन्द्रभान, पंडित वासुदेव भान, (सब लखनऊ) पंडित उपेन्द्र नरायण मिक्कू (राम स्नेही घाट) पंडित जय गोपाल जुत्शी, पंडित लालता प्रसाद बटपोरी, पंडित लक्ष्मी नरायण मुन्शी, पंडित राज नरायण तिक्कू, पंडित देवी प्रसाद ऊँट, पंडित अमर नाथ बटपोरी, पंडित अयोध्या नाथ ठस, पंडित विशम्भर नाथ सप्रू, पंडित जीवन राम शिवपुरी, पंडित हरि कृष्ण गंजूर तथा पंडित काशी नाथ रैना (सब फैजाबाद) पंडित अयोध्या नाथ कुंजरू (इलाहाबाद) पंडित शीतला प्रसाद खूंखूं तथा पंडित बिशम्भर नाथ दर (शाहाबाद) पंडित गोकल नाथ मुट्टू, पंडित श्याम नाथ रैना, पंडित भैरों सहाय किम्मू तथा पंडित त्रिभुवन नाथ चकबस्त (सब सीतापुर) पंडित जय नरायण दर, पंडित बिशेश्वर प्रसाद पहलवान, पंडित कामेश्वर नाथ सर्राफ तथा पंडित कन्हैया लाल साहिबी (सब सुलतानपुर) पंडित बिशेश्वर नाथ मुन्शी

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

(सरायमीरान) पंडित जय नरायण काचर, पंडित बिशम्भर नाथ कौल सुंगहया, पंडित शिव नाथ ठस, पंडित अमर नाथ सप्रू कर्बलाई, पंडित बिशन नरायण गंजू तथा पंडित दीना नाथ कौल उगरा (सब लखीमपुर खीरी) पंडित गोविन्द नरायण रैना, पंडित लक्षमण प्रसाद सप्रू, पंडित जानकी नाथ मुशरान, पंडित जुगल किशोर तैमनी, पंडित देवी सहाय सप्रू, पंडित गौरी शंकर घासी, पंडित जगदीश नरायण शिवपुरी, पंडित जीवन राम कौल, पंडित हरि शंकर शिवपुरी, पंडित कृष्ण लाल कौल, पंडित मोती लाल कौल शर्गा, पंडित भोला नाथ काचरू, पंडित अमर नाथ कौल, पंडित बिहारी लाल गौरीचू, पंडित हरि कृष्ण ओखल, पंडित प्रेम कृष्ण कल्ला, पंडित केदार नाथ लंगर, पंडित ज्वाला नाथ शिवपुरी, पंडित धर्म चन्द्र सिब्बू, पंडित जानकी नाथ मदन, पंडित निरंजन नाथ दर, पंडित जिया लाल टोपा, पंडित निरंजन नाथ लंगर, पंडित बैज नाथ वाटलू, पंडित निरंजन नाथ जिब्बू, पंडित अयोध्या नाथ गुर्टू, पंडित जवाहर लाल कौल, पंडित राम नरायण शिवपुरी, पंडित निरंजन लाल कौल, पंडित प्यारे लाल टोपा, पंडित प्राण कृष्ण हुण्डू, पंडित बहादुर सिंह गयी, पंडित लक्ष्मी राम, पंडित वासुदेव प्रसाद, पंडित दाता किशन तथा पंडित प्रेम नरायण (सब दिल्ली)।

इस ऐतिहासिक घटना के पश्चात कश्मीरी पंडित बिरादरी दो घटकों में विभाजित हो गयी और धर्मसभा तथा बिशन सभा के सदस्य आपस में ही तलवारें भांजने लगे। बिरादरी को संगठित कर शक्तिशाली बनाने के सारे प्रयास एकाएक धराशायी हो गये जिसका दुःखद परिणाम यह हुआ कि 19वीं शताब्दी के अन्त तक कश्मीरी पंडितों का कोई भी शक्तिशाली सर्वमान्य संगठन नहीं बन पाया जिसमें बिरादरी की एकजुटता को बनाये रखने की क्षमता होती और जो युवा वर्ग को एक नयी दिशा देने में सक्षम होता। किसी समझदार व्यक्ति ने ठीक ही कहा है–

मुहब्बत में नहीं है फ़र्क जीने और मरने का,
उसी को देखकर जीते हैं जिस काफिर पे दम निकले।

(डॉ0 बैकुण्ठ नाथ शर्गा)
मनोहर निवास
कश्मीरी मुहल्ला
लखनऊ–226003.

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com